पृथ्वी की रक्षा करें, मानवता का उत्थान करें

स्वामी ईश्वरानन्द

‘मन्दिर में रहो’ सत्संग
सिद्धयोग वैश्विक हॉल में यूरोप व रूस के लिए सीधा वीडिओ प्रसारण
बुधवार, २२ अप्रैल, २०२०

नमस्ते! Bienvenue! Welcommen! Bienvenidos! Ciao! Добро пожаловать!

‘मन्दिर में रहो’ सत्संग के इस सीधे वीडिओ प्रसारण के दौरान, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आपसे बात करते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है।

जैसा कि आप जानते हैं, मैं एक सिद्धयोग स्वामी हूँ और सिद्धयोग ध्यान-शिक्षक भी हूँ। यह मेरा महान सद्भाग्य रहा है कि मुझे श्रीगुरुमाई की यूरोप एवं अन्य कई देशों की टीचिंग्स् विज़िट्स में उनके साथ यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। श्रीगुरुमाई के कहने पर, मैंने अन्य अवसरों पर सिद्धयोग की सिखावनियों के प्रसार हेतु, इस विश्व के अनेक स्थानों की यात्राएँ भी की हैं। अपनी इन यात्राओं के दौरान मैं हज़ारों-लाखों ऐसे अद्भुत लोगों से मिला जो सभी . . . खोज रहे थे।

आज, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आप सभी इतने अच्छे लोगों के साथ होने से मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्नता से भरा है। मुझे आप सभी से बात करते हुए बेहद खुशी हो रही है, आप सभी सिद्धयोगियों से जो कई दशकों से सिद्धयोग पथ का अनुसरण कर रहे हैं। यह जानकर भी मुझे एक मीठी-सी प्रसन्नता हो रही है कि कई नए साधक भी ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में भाग ले रहे हैं।

मैं आपको वह बताना चाहता हूँ जो आप पहले से ही जानते हैं—और वह यह कि श्रीगुरुमाई ने कहा है कि आज, २२ अप्रैल को Earth day [अर्थ डे] यानी पृथ्वी को समर्पित दिवस के सम्मान में, मैं वैश्विक हॉल में विशेषरूप से आप सभी के साथ बात करूँ जो उत्तरी, पूर्वी और पश्चिमी यूरोप में रह रहे हैं। अब कुछ समय लेकर मैं आपको उन देशों के बारे में बताना चाहता हूँ जहाँ से प्रतिभागी

आज के इस सत्संग में उपस्थित हैं। *[अंग्रेज़ी में पृथ्वी को Earth [अर्थ] कहते हैं और day[डे] यानी दिवस; अत: Earth day [अर्थ डे] यानी पृथ्वी को समर्पित दिवस।]*

पश्चिमी यूरोप से सिद्धयोगी भाग ले रहे हैं : यूनाइटेड किंगडम, फ़्रान्स, इटली, नीदरलैन्ड्स, स्पेन, जर्मनी, ऑस्ट्रिया, आयरलैन्ड तथा बेल्जियम से। साथ ही उत्तरी यूरोप से हमारे साथ भाग ले रहे हैं : डेनमार्क, स्वीडन, नॉर्वे, फ़िनलैन्ड से। और पूर्वी यूरोप के देशों से भी सिद्धयोगी हमारे साथ हैं : पोलैन्ड, रूस, लिथुआनिया, हंगरी, स्लोवीनिया से। मेरे विचार से कुछ देश और भी हैं जो भाग ले रहे हैं, किन्तु समय-सीमा का सम्मान करते हुए मैं केवल यही कहूँगा : आप जानते हैं कि आप कौन हैं।

हर 'मन्दिर में रहो' सत्संग का आरम्भ, वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश की कलाकृति की भव्य छवि से होता है। इसी कारण, इस सत्संग की शुरुआत में ही आपको सन्देश-कलाकृति के दर्शन हुए और आप इस कलाकृति के अध्ययन में और भी गहरे उतर सके।

इसके बाद, आप सभी को श्री मुक्तानन्द आश्रम के परिसर में वसन्त ऋतु के दौरान लिए गए प्रकृति के मनोरम दृश्यों का उपहार मिला। मुझे लगता है कि आपके देशों का और श्री मुक्तानन्द आश्रम का मौसम और जलवायु लगभग एक-से हैं। श्री मुक्तानन्द आश्रम के इन प्राकृतिक दृश्यों को देखते समय आपको लगा होगा, "अरे हाँ, मैं यह जानता हूँ। अरे हाँ, मैं यह जानता हूँ।" आपको बिल्कुल अपने घर की तरह लगा होगा।

अब यह बात चल ही रही है तो मैं आपको यह अवश्य बताना चाहूँगा कि इन दिनों श्री मुक्तानन्द आश्रम में मौसम का मिज़ाज *काफ़ी* बदलता रहा है। पिछले कुछ सप्ताहों में ही देखें, तो सूर्य-देवता ने आसमान में अपने तेजोमय रूप में प्रकट होकर हमारा अभिवादन किया और हमें आशीर्वादित किया है; श्रीहनुमान ने प्रबल वेग के पवन के रूप में; देवी महाकाली और भगवान श्रीकृष्ण ने आसमान में उमड़ते-घुमड़ते काले-घने, वर्षा से भरे मेघों के रूप में और कुछ ही दिन पूर्व भगवान शिव ने आश्रम-परिसर को लगभग सात इंच मोटी बर्फ़ की चादर से ढककर हमारा अभिवादन करते हुए हमें आशीर्वाद प्रदान किया।

ऐसा लग रहा है कि जब हम लॉकडाउन में हैं, तब सभी देवी-देवता बाहर आकर आनन्द मना रहे हैं!

लॉकडाउन की और घर पर रहने की बात करते हुए, क्या आपने "घर पर रहें, सुरक्षित रहें"—इसे अपना आदर्श-वाक्य बना लिया है? क्या आप इसे अपना पाए हैं? ऐसा करने में क्या आपको कोई कठिनाई हुई?

जैसा कि गुरुमाई जी ने ईस्टर रविवार पर अपने प्रवचन में कहा था : "यह संसार एक अन्धेर नगरी है। हम इस अन्धेर नगरी संसार में रह रहे हैं।"

मैं इन ख़बरों की जानकारी रख रहा हूँ कि कैसे हर देश कोविड-१९ का सामना कर रहा है, उससे जूझ रहा है, उससे निपटने के तरीक़ों को अपना रहा है और उनका संचालन व प्रबन्धन कर रहा है। कुछ देशों द्वारा उठाए गए क़दमों से मैं काफ़ी प्रभावित हुआ हूँ—विशेषकर उनसे जिन्होंने तत्काल लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी। उन देशों ने सक्रियता से समय पर निर्णय लिया और वहाँ के लोगों ने अपने नेताओं की बात मानने में तत्परता दिखाई, इसी कारण, वे देश धीरे-धीरे लोगों को वापस अपने काम पर लौटने और बच्चों को स्कूल जाने की अनुमति दे सके हैं।

निश्चित ही, वे अब भी सामाजिक दूरी बनाए रखने का पालन कर रहे हैं और सभी आवश्यक सावधानियाँ बरत रहे हैं, जैसे कि मास्क पहनना और हाथों को अच्छी तरह से धोना। उन सभी देशों को बधाई जो अपने त्वरित निर्णयों के व उन्हें कार्यान्वित करने के लाभों का आनन्द उठा रहे हैं, और इस वजह से आप में से कई लोग जीवन में स्वतन्त्रता का अनुभव कर पा रहे हैं।

मैंने पहले बताया है कि श्रीगुरुमाई के कहने पर, 'अर्थ डे' के सम्मान में 'मन्दिर में रहो' के इस सत्संग का, यूरोपीय देशों में सीधा वीडिओ प्रसारण किया जा रहा है।

शायद आप यह जानते हों कि विश्व में 'अर्थ डे' मनाने की शुरुआत कैसे हुई; फिर भी, मैं आपको इसके बारे में कुछ तथ्य बताना चाहूँगा। प्रत्येक वर्ष २२ अप्रैल को विश्वभर में 'अर्थ डे' मनाया जाता है और यह इस ख़ूबसूरत पृथ्वी ग्रह के सम्मान व संरक्षण हेतु समर्पित है—धरती माँ के सम्मान व संरक्षण हेतु जो हम सभी का पोषण करती हैं। पहली बार 'अर्थ डे' पचास वर्ष पूर्व, २२ अप्रैल, १९७० को अमरीका में मनाया गया था। तीस वर्ष पूर्व, सन् १९९० में, यह इस संसार के सभी देशों में मनाया जाने वाला एक सार्वभौमिक कार्यक्रम बन गया।

मैं उन लोगों का बहुत आभारी हूँ जो पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध हैं। उनके कठोर परिश्रम व दृढ़ प्रयत्नों के फलस्वरूप हमारे पास एक बेहतर संसार है—जिसमें हम एक परिपूर्ण जीवन जी सकते हैं, उद्देश्यपूर्ण जीवन जी सकते हैं। अमरीका में स्थित 'आर्बर डे फ़ाउन्डेशन' के अनुसार एक औसत वृक्ष, एक ऋतु में इतनी ऑक्सीजन का उत्पादन करता है, जो पूरे एक वर्ष तक, १० लोगों के श्वास लेने के लिए पर्याप्त है।

यद्यपि वर्तमान में मानवता एक अनकहे संकट से गुज़र रही है—सदी के सबसे बड़े संकट से—फिर भी हमें बताया गया है कि कैसे जलाशय, पर्वत, समुद्र-तट अधिकाधिक स्वच्छ और निर्मल होते जा रहे हैं और अपने मूल, शुद्ध स्वरूप में लौट रहे हैं। हालाँकि हमारे हृदय में पीड़ा है, फिर भी हमें सजग रहकर अपनी धरती माँ के इस विलक्षण रूपान्तरण के प्रति अपनी कृतज्ञता अर्पित करनी चाहिए।

इन असाधारण रूपान्तरणों को ध्यान में रखते हुए, गुरुमाई जी ने कहा कि
एस. वाय. डी. ए फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग के प्रमुख, सन्दीप कनोसल, आप सभी को एक सूचना भेजें और बताएँ कि यदि आप चाहें तो आपने प्रकृति की जो तस्वीरें ली हैं, उन्हें आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को भेज सकते हैं। और हाल ही में सन्दीप ने श्रीगुरुमाई को बताया कि एक ही रात में वेबसाइट विभाग को प्रकृति की सैकड़ों-हज़ारों तस्वीरें आ चुकी हैं। मैं इस अवसर पर आप सभी को आपकी उदारता के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।

आपके द्वारा इस तरह तुरन्त ही प्रकृति की तस्वीरें भेजने से गुरुमाई जी अत्यन्त प्रभावित हुईं। श्रीगुरुमाई ने कहा, "मैं बहुत द्रवित हूँ। मुझे इन लोगों से बड़ा प्रेम है। तुम सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

सन्दीप ने यह सुनिश्चित किया कि सोमवार, २० अप्रैल की शाम को आपके द्वारा भेजी गई प्रकृति की शानदार तस्वीरों को सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट किया जाए जिसका शीर्षक है "Glimpses of Nature" यानि प्रकृति की झलकियाँ और यह शीर्षक श्रीगुरुमाई द्वारा प्रदान किया गया है। मैं आशा करता हूँ कि आपने प्रत्येक तस्वीर को सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के अपने किसी मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के रूप में देखा होगा या आप इसे उस रूप में देखेंगे। हरेक तस्वीर यह समझ प्रदान करती है कि एक सिद्धयोगी, संसार को किस तरह देखता है, किस प्रकार इसके सौन्दर्य को स्वीकारता है और इस ग्रह के उदारता से दिए गए प्रचुर उपहारों का सम्मान करता है।

अब एक बार फिर विश्व के वर्तमान समाचारों की ओर चलते हैं : मैं जब भी समाचार माध्यमों [मीडिया] द्वारा उपलब्ध कराई गई ख़बरों को पढ़ता हूँ, तो मेरा सामना इस कड़वी सच्चाई से होता है कि सारे संसार में कितनी सारी कठिनाइयाँ और अनिश्चितताएँ हैं। कई विशेषज्ञों का अनुमान है कि सब कुछ पहले जैसा होने में लम्बा समय लग सकता है, शायद कुछ वर्ष भी लग जाएँ। एक अनुभवी सिद्धयोगी होने के नाते, मैं खुद से पूछता हूँ :

> "इस अजीब-से, असामान्य समय में मैं कैसे अपनी मनःस्थिति को सँभाले रखूँ और दूसरों की सहायता करूँ?"

“कैसे मैं अपने सिद्धयोग अभ्यासों को करता रहूँ और दूसरों को भी यह प्रेरणा दूँ कि वे सिद्धयोग की सिखावनियों को दृढ़ता से थामे रखें?”

“मैं किस प्रकार श्रीगुरुमाई द्वारा ‘मधुर सरप्राइज़ २०२०’ में प्रदान किए गए शब्दों का परिपालन करूँ और मैं किस प्रकार अपने संकल्प, अपनी मनोकामना, अपनी परिकल्पना, अपने सपने और अपनी प्रार्थना को निर्धारित करके उन पर कार्य करूँ?”

“ऐसे समय में, जब संसार में सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया है, मैं अपनी उच्चाकांक्षाओं को कैसे पूरा करूँ?

जब मैं खुद से ये प्रश्न पूछता हूँ, तो ये मेरे अपने दृष्टिकोण, मेरे अपने व्यवहार और कार्यों को करने के मेरे अपने तरीक़ों से सम्बन्धित होते हैं। ये इस बारे में होते हैं कि मैं किस प्रकार अपने उत्तरदायित्त्वों को पूरा कर सकता हूँ और साथ ही उसके प्रति सम्मान बनाए रखते हुए उस चीज़ के प्रति सच्चा बना रह सकता हूँ जो मुझे अपने जीवन में सर्वाधिक प्रिय है—और वह है, सिद्धयोग पथ और गुरुमाई जी की व उनके मिशन की सेवा करना। और क्या आप जानते हैं कि इसके अलावा और क्या है? मैंने देखा है और इससे मुझे प्रेरणा व साहस भी मिला है कि इस धरती पर कई लोग ऐसे हैं जो बहुत विचारशील हैं, उदार हैं और जिनके पास सद्‌गुण वैभव यानी वे दिव्य सद्‌गुण हैं जिनका प्रतिदिन अभ्यास करने के लिए गुरुमाई जी ने हमें निर्देश दिया है।

श्रीगुरुमाई हमेशा कहती हैं कि इस विश्व के लोगों में जो असीम प्रतिभा, रचनात्मकता और उदारता है, उसे देखकर उन्हें सुखद आश्चर्य होता है। कुछ ही दिन पहले गुरुमाई जी रोहिणी मेनन को इसका एक उदाहरण बता रही थीं। रोहिणी सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों की प्रबन्ध निर्देशक [मैनेजिंग डायरेक्टर] हैं जिन्होंने बाद में मुझे उसके बारे में बताया।

यह उदाहरण स्विट्ज़रलैन्ड से था। लगभग एक माह से हर रात एक लाइट आर्टिस्ट [वे कलाकार जो रोशनी के माध्यम से किसी कलाकृति को अभिव्यक्त करते हैं], विभिन्न देशों के झण्डों के रंगों को, प्रसिद्ध आल्प्स् पर्वत-शृंखला की एक पहाड़ी—मैटरहॉर्न पर प्रोजेक्टर द्वारा दिखा रहे थे। शनिवार, १८ अप्रैल को इन कलाकारों ने भारत के तिरंगे झण्डे के तीन रंगों—केसरिया, श्वेत व हरे रंग को मैटरहॉर्न पर प्रदर्शित किया।

और क्या आप जानते हैं कि इससे भी बड़ी बात क्या है? आप में से बहुत-से लोगों ने उन तस्वीरों को अवश्य देखा होगा जिनमें गुरुमाई जी मैटरहॉर्न की ढलान पर बैठी हैं।

ईशा सरदेसाई, जो सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के लिए विषय-वस्तु सम्बन्धी सेवा अर्पित करती हैं, ने मुझे बताया कि जिस दिन मैटरहॉर्न पर भारत का तिरंगा प्रदर्शित किया गया, उसी दिन सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर वे सिखावनियाँ पोस्ट की गईं जिन्हें गुरुमाई जी ने भारत के सिद्धयोगियों के साथ आयोजित 'मन्दिर में रहो' सत्संग में प्रदान किया था। और क्या आप जानते हैं कि और क्या हुआ? श्रीगुरुमाई ने एक विशेष निर्देश दिया था कि इस सत्संग में दी गई उनकी सिखावनियों के साथ पोस्ट की जाने वाली डिज़ाइन भारत के तिरंगे के रंग में होनी चाहिए। तो जिस समय भारत का तिरंगा सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट हुआ, उसी समय वह स्विस आल्प्स् की पहाड़ियों पर अपने सम्पूर्ण वैभव के साथ प्रदर्शित किया जा रहा था।

इस समय, मैं आपको एक सिद्धयोगी का अनुभव पढ़कर सुनाना चाहूँगा जो मर्लनवल, फ़्रान्स से हैं और जिन्होंने श्रीगुरुमाई के साथ आयोजित 'मन्दिर में रहो' के एक सत्संग में भाग लिया था। यह अनुभव सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट किया गया है। ये सिद्धयोगी लिखते हैं :

> श्रीगुरुमाई द्वारा इस बात की याद दिलाया जाना बहुत अद्‌भुत था कि अपने विचारों और भावनाओं के लिए मैं खुद ज़िम्मेदार हूँ! यहाँ फ़्रान्स में इस समय जब हम एक-दूसरे से मिल नहीं पा रहे और अकेले रह रहे हैं, तब मैं यह जान पा रहा हूँ कि पिछले वर्षों में मैंने जिन सिद्धयोग रिट्रीट्स और कोर्स में भाग लिया है, उन रिट्रीट्स और कोर्स ने व साथ ही सेवा एवं ध्यान के आध्यात्मिक अभ्यासों ने मुझे सिखाया है कि मैं एकाग्रचित्त रहूँ, अपनी भावनाओं को स्वीकार कर उन पर मनन करूँ और समझूँ कि सब कुछ गुज़र जाएगा। कठिन समय आने पर ही, मैं साधना और सिद्धयोग सिखावनियों के महत्त्व को और भी अधिक स्पष्टता से समझ पा रहा हूँ।

इन साधक ने जिन सिद्धयोग रिट्रीट्स और कोर्स के बारे में बताया है, उनमें सिद्धयोगियों ने सिद्धयोग ध्यान के अभ्यास पर केन्द्रण किया और दिव्य सद्‌गुणों का तथा विशेषरूप से उस साल के श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश से सम्बन्धित अन्य विषयों का अध्ययन किया। इन साधक का अनुभव पढ़कर, मुझे उन सभी असाधारण सिद्धयोग टीचिंग्स् विज़िट्स एवं रिट्रीट्स की याद आ गई जिन्हें गुरुमाई जी ने पूरे यूरोप में आयोजित किया था। और मुझे आप में से कई लोग भी याद हैं जिनके साथ मैंने कई वर्षों तक इन सिद्धयोग टीचिंग्स् विज़िट्स और कार्यक्रमों को सम्बल प्रदान करने हेतु सेवा अर्पित की है।

मेरी आँखों के सामने कई चेहरे उभर रहे हैं :

> स्विट्ज़रलैन्ड से हम्सुऐली रेम्ज़ायर,

लन्दन से वामन व एनी ग्रेग तथा लक्ष्मी ज़ैरॉड हॉल,

हॉलैन्ड से यनहार्म व सिन्डा मस्टर्स जो अब यू. के. में हैं,

स्लोवीनिया से माया सैराई,

जर्मनी से कार्लहाइन्स व ऊता गैल्हॉर्ट,

इटली से क्रिस्टीना बौम्बा, स्वस्तिमती ब्रिआन्ज़ा, लियोनार्दो रूस्सो व सरोज डेल डुका,

ऑस्ट्रिया से गोविन्दा श्वार्ज़ व अन्दीन डैलिश,

स्पेन से मिगॅल व मरिया पैनाल्वा,

पोलैन्ड से यूजीन व पवित्री वीपयोर जो अब यू. के. में हैं,

डेनमार्क से विनी व आइगेल मोल्स्गार,

फ़्रान्स से रुद्र शार्प व खदीजा लगरानी शार्प,

रूस से मार्क व लीडिआ कार्प।

समय-सीमा का ध्यान रखते हुए मैं यहाँ केवल कुछ ही नाम ले रहा हूँ। इसलिए यह जान लें : यदि आपको यह याद है कि आपने श्रीगुरुमाई की टीचिंग्स् विज़िट्स के दौरान मेरे साथ सेवा अर्पित की थी, तो मुझे भी आप याद हैं।

लगभग ढाई दशक से भी अधिक समय तक, श्रीगुरुमाई ने पूरे यूरोप में सत्संग, रिट्रीट्स और शक्तिपात ध्यान-शिविर आयोजित किए—उदाहरण के लिए लन्दन, पेरिस, ब्रुसेल्स, रोम, मॉन्त्रो, हाइडलबर्ग, सिट्जॅस् और वूड्ज में। उन यात्राओं के दौरान श्रीगुरुमाई कई समुदायों से मिलीं। मुझे याद है, हरेक पड़ाव पर, श्रीगुरुमाई प्रमुख सेवाकर्ताओं से मिलतीं और हमेशा उन्हें “एक-साथ काम करने के लिए” प्रोत्साहित करतीं।

यह हमेशा से ही श्रीगुरुमाई का प्रमुख सिद्धान्त रहा है।

जब हम साथ मिलकर काम करते हैं,

चाहे हम एक-दूसरे से सहमत हों या न हों,

चाहे हम एक-दूसरे से लड़ाई-झगड़ा करें या न करें,

चाहे हम एक-दूसरे को पसन्द करें या न करें,

चाहे एक-दूसरे के साथ हमारे मतभेद हों या न हों,

इन सबके बावजूद, जब हम एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक-साथ काम करते हैं तो वह श्रीगुरु के हृदय को अत्यधिक प्रसन्न करता है।

पूर्वी व पश्चिमी यूरोप के सिद्धयोगियों ने जो कठिन परिश्रम किया है, उसके लिए मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहता हूँ। आपने एक लम्बे समय तक, हर वर्ष यूरोपीय रिट्रीट का आयोजन किया और वर्ष १९९५ से १९९६ तक यूरोप में महायात्रा की तैयारियाँ कीं। आज अपनी वार्ता तैयार करते समय एक क्षण ऐसा आया जो अत्यन्त खुशी से भरा था, जब मुझे लगा, "अरे वाह!" और वह यह था कि इस वर्ष हम श्रीगुरुमाई की महायात्रा की पच्चीसवीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। जी हाँ! श्रीगुरुमाई की महायात्रा की रजत जयन्ती। धन्यवाद, गुरुमाई जी और आप सब को भी धन्यवाद।

यह महायात्रा वर्ष १९९५ और १९९६ में श्रीगुरुमाई की भव्य सिद्धयोग ध्यान यात्रा थी जो सात महीनों तक चली। इस दौरान हम उत्तरी अमरीका व पूरे यूरोप में कई स्थानों पर रुके जहाँ श्रीगुरुमाई ने अपनी सिखावनियाँ प्रदान कीं। इस यात्रा का शानदार समापन हुआ, इंग्लैन्ड के लन्दन शहर में स्थित वेम्ब्ली हॉल में आयोजित सार्वभौमिक सैटेलाइट शक्तिपात ध्यान-शिविर द्वारा, जिसका शीर्षक था, "उत्साह में झूमते चलो, प्रभु की महिमा गाते चलो।" यह सिखावनी, वर्ष १९९६ के लिए श्रीगुरुमाई का नववर्ष-सन्देश था।

श्रीगुरुमाई ने इस महायात्रा को कहा था "the tour of a million hearts," यानी "असंख्य हृदयों की यात्रा," क्योंकि इसने—सच में लाखों-करोड़ों दिलों को—छू लिया था और जाग्रत किया था। मुझे यह अच्छी तरह से याद है क्योंकि पच्चीस वर्ष पूर्व आयोजित इस महायात्रा में सेवा अर्पित करने वाले सात प्रबन्धकों में से मैं भी एक था। मुझे यह भी याद है कि टीचिंग्स् विज़िट् का एक प्रबन्धक होने के नाते, यात्रा के लिए हर चीज़ की तैयारी करने के लिए कितना कुछ करना होता था। जुलाई १९९५ में यह बताया गया था कि अक्टूबर माह की शुरुआत में इस महायात्रा का आरम्भ होगा। इसलिए अगले दो महीनों में यात्रा-प्रबन्धकों ने कार्यक्रमों के लिए स्थान और लोगों के ठहरने के लिए होटल बुक किए, वीडिओ व ऑडिओ के उपकरणों को ट्रकों व हवाई जहाज़ से मँगवाया और विश्वभर से सैकड़ों सिद्धयोगियों को चुना जो हर टीचिंग्स् विज़िट् का आयोजन करने में सहयोग प्रदान कर सकें ।

हर पड़ाव पर पहुँचने पर हमें जैसा भी स्थान मिलता—जैसे कि कोई सभा-कक्ष मिलता—तो हमें उसे एक सिद्धयोग सत्संग हॉल में परिवर्तित करना होता। हम उस स्थान की अच्छी तरह सफ़ाई

करते, दरियाँ बिछाते, कुर्सियाँ लगाते, वहाँ लाइट और ऑडिओ उपकरणों का प्रबन्ध करते और आसन के पीछे के स्थान को आकर्षक ढंग से सजाते। हम सभी के लिए भोजन भी बनाते और लोगों के कार्यक्रम-स्थल तक आने और वहाँ से वापस जाने के लिए वाहन की व्यवस्था भी करते। वहाँ की यात्रा समाप्त होने पर हमें जल्द ही सब कुछ हटाकर निर्धारित समय में उस स्थान को ख़ाली करना होता। हम सारा सामान ट्रकों में भरते और अगली यात्रा पर निकल पड़ते—और दूसरे देश में पहुँचकर फिर उसी तरह शुरुआत करते। मैं यह भी बताना चाहूँगा कि हम हर एक स्थान को पहले से अधिक साफ़-सुथरा छोड़ते, उससे भी अधिक साफ़ जैसा वह हमें वहाँ पहुँचने पर मिला होता था।

बड़ा ही महिमामय समय था वह—महायात्रा पर, श्रीगुरुमाई के साथ विश्वभर की यात्रा करना, उनके प्रेम और उनकी कृपा व सिखावनियों को सब तक पहुँचाना। और अब उन सभी विभिन्न सेवाओं के अद्भुत फलों को देखें, जो कृपा से भरे इतने वर्षों पूर्व अर्पित की गई थीं! अब, रोहिणी मेनन जो ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों के सीधे वीडिओ प्रसारण की प्रबन्ध निर्देशक हैं, वे इन सत्संगों के आयोजन में सेवा अर्पित कर रहे सभी सहसेवाकर्ताओं से कह रही हैं कि वे सभी श्रीगुरुमाई के साथ एक यात्रा पर हैं।

जब मैंने यह सुना, तो मुझे लगा, “कितना अद्भुत है यह!”

इन दिनों, आप जहाँ कहीं भी हैं, वहीं से इस यात्रा में भाग ले सकते हैं—और ऐसा करने के लिए आपको यात्रियों से भरे हवाई जहाज़ पर चढ़ने की ज़रूरत भी नहीं है, और न ही आपको कोई बस पकड़ने के लिए दौड़ना है, या कार चलाते हुए देश के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचना है या महीनों पहले यह तय करना है कि आपको छुट्टियाँ कब लेनी हैं। कम्प्यूटर पर या किसी और मोबाइल उपकरण पर बस एक बटन दबाकर हम सभी सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एक-साथ आ सकते हैं और ‘मन्दिर में रहो’ सत्संगों में भाग ले सकते हैं।

महायात्रा से सम्बन्धित मुझे एक प्रसंग याद है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। दिसम्बर १९९५ में, महायात्रा चल ही रही थी और हम कैलिफ़ोर्निया स्थित, पाम स्प्रिंग्स में शीतकालीन रिट्रीट के मध्य में थे। हज़ारों लोग इसमें भाग ले रहे थे। इस रिट्रीट के दौरान, एक दिन श्रीगुरुमाई ने यात्रा के प्रबन्धकों के साथ एक मीटिंग रखी और हम सभी से कहा कि हमें महायात्रा के कार्यक्रम में पोलैन्ड को भी शामिल करना चाहिए।

गुरुमाई जी से उनका निर्देश सुनने के बाद हम सभी उस स्थान पर वापस गए जहाँ हम सब प्रबन्धक मीटिंग करते थे और हम एक-दूसरे की ओर ऐसे देखने लगे जैसे हमें अपने कानों पर विश्वास ही न

हो रहा हो। हम सोच रहे थे कि भला हम ऐसा कैसे कर सकेंगे, क्योंकि यात्रा चल रही थी और बीच में एक और नया पड़ाव जोड़ने के लिए बड़े पैमाने पर योजनाएँ बनानी होंगी और बहुत-सी व्यवस्थाएँ करनी होंगी। मुझे यह तो याद नहीं कि हममें से किसने बात शुरू की, परन्तु उस मीटिंग में एक समय ऐसा आया जब वहाँ शामिल हम सभी को यानी एस. वाय. डी. ए फ़ाउन्डेशन के यात्रा-प्रबन्धकों को एक युक्ति सूझी। और वह बढ़िया-सी युक्ति थी कि हम यूरोप के सिद्धयोग के नेतृत्वकर्ताओं से सम्पर्क करें और उन्हें श्रीगुरुमाई के इस प्रेरणाप्रद निर्देश के बारे में बताएँ और उसके बाद वहीं से इसे आगे बढ़ाएँ।

बड़े उत्साह के साथ, हमने यूरोपीय संघम् को इस निर्देश के बारे में बताया। और हमें जो मिला वह था बहुत बड़ा आश्चर्य। यूरोप के नेतृत्वकर्ताओं की ओर से ज़बर्दस्त "हाँ" में उत्तर मिला!" उन्होंने कहा, "हम इसे ज़रूर कर सकते हैं।" यूरोप के सिद्धयोग नेतृत्वकर्ताओं के उत्तर ने हमारे दिलों को छू लिया और यह जानकर हमें बहुत अच्छा लगा कि पोलैन्ड में इस यात्रा के पड़ाव की व्यवस्था करने के लिए उनके पास बेहद शानदार योजना भी थी। उन्होंने *सचमुच* यह कर दिखाया। उन्होंने श्रीगुरुमाई की आज्ञा पूर्ण की। इसके लिए, हम सदा आप सभी के आभारी हैं। यह है, सिद्धयोग संघम् की शक्ति। यदि कोई एक व्यक्ति किसी कार्य को नहीं कर सकता तो अवश्य ही कोई दूसरा होगा जो उस कार्य को *कर सकता होगा।* यही बात हम सबको एक-साथ लाती है। हम सब साथ मिलकर कृपा की अनुभूति कर पाते हैं और कृपा से मिले फलों को एक-दूसरे के साथ, सभी के साथ बाँट पाते हैं।

अब मैं आपको जो बताने जा रहा हूँ, वह सिद्धयोग के इतिहास का एक प्रसंग है, जिसे मैंने खुद पहली बार तब सुना जब मैं महायात्रा पर था। १९६० के दशक में, पोलैन्ड से कुछ साधक बाबा मुक्तानन्द के दर्शन करने और आश्रम में आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए गुरुदेव सिद्धपीठ आए थे। वे अत्यन्त समर्पित साधक थे। अपने आश्रम-प्रवास की समाप्ति पर वे बहुत तृप्त महसूस कर रहे थे कि वे बाबा जी की सिखावनियाँ व उनका मार्गदर्शन प्राप्त कर पाए, और एक पवित्र जीवन व्यतीत कर पाए। इसलिए, गुरुदेव सिद्धपीठ से जाने से पहले उन्होंने बाबा जी से आग्रह किया कि वे पोलैन्ड आएँ। तब बाबा जी ने कहा था कि यदि पोलैन्ड में सभी लोग उनके जैसे हों तो वे पोलैन्ड अवश्य आएँगे।

अब, यूरोप के सिद्धयोग नेतृत्वकर्ताओं और उनकी शानदार योजना के प्रसंग की चर्चा पर लौटते हुए मैं आपको बताना चाहता हूँ कि वह योजना क्या थी। उन्होंने दक्षिणी यूरोप के देशों में रहने वाले सभी सिद्धयोगियों से सम्पर्क किया और उनसे कहा कि वे स्पेन में स्थित सिट्जॅस् प्रान्त में होने वाली रिट्रीट में सहयोग करें और यह रिट्रीट पहले से ही निर्धारित थी; जबकि उत्तरी यूरोप के देशों

के सिद्धयोगियों से सम्पर्क कर उनसे कहा कि वे पोलैन्ड की रिट्रीट में अपना सहयोग दें। इस तरह, महायात्रा के कार्यक्रम में पोलैन्ड का नाम भी जुड़ गया और पोलैन्ड की यात्रा करने का वायदा जो तीस वर्ष पहले किया गया था, उसका सम्मान हुआ और वह पूरा हुआ।

और वह रिट्रीट अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं थी। मैं पूरी सच्चाई के साथ "चमत्कार" शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि वास्तव में ऐसा ही हुआ था—और गुरुमाई चिद्विलासानन्द के साथ इस सिद्धयोग रिट्रीट के दौरान और इसके बाद भी लोगों के जीवन में एक के बाद एक, चमत्कारों से भरी कहानियाँ सामने आती जा रही थीं। आज मैं आपको बस मुख्य झलकियों के बारे में बता रहा हूँ—और महायात्रा में तो *न जाने कितनी* झलकियाँ थीं।

उनमें से एक और विशिष्ट प्रसंग था, रूस के सिद्धयोगियों के बारे में जिन्होंने टीचिंग्स् विज़िट में भाग लिया था। मुझे वह क्षण याद है जब आप सभी रूसवासी सिद्धयोग रिट्रीट में भाग लेने के लिए आए थे जो कि पोलैन्ड के वूड्ज प्रान्त में स्थित ऑपेरा हॉल में आयोजित की गई थी। आप में से लगभग सौ लोग थे जिन्होंने श्रीगुरुमाई के साथ इस रिट्रीट में भाग लेने के लिए रेल और बस से तीन दिन और तीन रातों से भी अधिक लम्बी यात्रा की थी। रोमांच और ऊर्जा से भरा वह क्षण मुझे बहुत अच्छी तरह याद है, जब प्रातःकालीन श्रीगुरुगीता पाठ के समापन के तुरन्त बाद, आप सब सत्संग हॉल में पहुँचे और श्रीगुरुमाई के आसन की ओर जाने के लिए बने छोटे-से गलियारे से होते हुए, उनके दर्शन करने के लिए आए थे।

यह देखकर मैं दंग था कि इतनी लम्बी यात्रा करने पर भी आपके चेहरों पर ज़रा-सी भी थकान नहीं थी। आपने रातभर यात्रा की थी, इसके बावजूद, आप सुबह की ओस की बूँदों की तरह ताज़गीभरे लग रहे थे। जब आपने पहली-पहली बार श्रीगुरुमाई को प्रणाम किया, तो वह नमन कैसे असीम प्रेम और गहन विस्मयभाव से सिक्त था। आपके हृदय से उमड़ता भक्तिभाव का वह झरना और आपकी वह विनम्र मुद्रा अनूठी थी। मेरे हृदय पर अब भी उसकी अमिट छाप अंकित है। खिड़की से छनकर आती सूर्य की चमचमाती रोशनी में, आपकी आँखों से छलकते अश्रुओं के जगमगाते मोती दिखाई दे रहे थे। हममें से जो लोग उस समय गुरु-शिष्य के बीच के इस प्रेम के साक्षी थे, वे भी अश्रुओं से भीग गए थे।

आप कह सकते हैं कि ये प्रेम-भक्ति से सिक्त आँसू थे, वे आँसू जो मानो यह कह रहे हों "आख़िर हम मिल ही गए", कृतज्ञता के आँसू और क्षमा के आँसू जो उस आशीर्वादभरे क्षण में पोलैन्ड और रूस के बीच बह रहे थे। उस शुद्धिकारक क्षण को मैं कभी नहीं भूल सकता। कैसे श्रीगुरु की कृपा हम सबको

एक कर देती है। समय का ध्यान रखने के लिए मैं आपको एक के बाद एक कहानी नहीं सुनाता जाऊँगा, हालाँकि मैं ऐसा बख़ूबी कर सकता हूँ।

अहा! महायात्रा। गुरुमाई जी, हम कृतज्ञ हैं। आपको कोटि-कोटि धन्यवाद।

आप सभी को धन्यवाद। आप सभी का तहे दिल से शुक्रिया।

जी हाँ, हम अपनी पुरानी यादों की गलियों से होकर गुज़रे हैं, इसी जागरूकता के साथ कि हमारी सिद्धयोग साधना हमें यहाँ ले आई है; ज्योतिर्मय, तेजोमय भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में, इस 'मन्दिर में रहो' सत्संग के लिए, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में।

मन्दिर के प्रवेशद्वार पर लिखी हुई बड़े बाबा की समयातीत सिखावनी है : "सभी पवित्र तीर्थों का केन्द्र हृदय है। वहाँ जाओ और वहीं रमण करो।"

स्वामी जी द्वारा निर्देश दिए जाने के बाद, सत्संग के प्रतिभागियों ने ध्यान किया और फिर 'ज्योत से ज्योत जगाओ' आरती गाई। आरती के बाद, स्वामी जी ने अपनी वार्ता में आगे कहा।

जब पुजारी आरती कर रहे थे और हम सब 'ज्योत से ज्योत जगाओ' आरती गा रहे थे, तब हमने नगाड़े और अन्य विभिन्न वाद्ययन्त्रों की ध्वनियाँ सुनीं, जैसे शंख, मँजीरे, घण्टा, झांझ और डमरू की।

सिद्धयोग पथ पर, हम उल्लास से भरी विभिन्न ध्वनियाँ उत्पन्न करने के लिए कई तरह के वाद्ययन्त्रों का उपयोग करते हैं। ये ध्वनियाँ ब्रह्माण्डीय शक्ति और कृपा का आवाहन करती हैं। इन ध्वनियों के अनेकानेक लाभ हैं। कोविड-१९ को फ़ैलने से रोकने और इसके प्रभावों पर विजय पाने के लिए किए जाने वाले वैश्विक संघर्ष के दौरान, भारत के प्रधानमन्त्री, श्री नरेन्द्र मोदी ने पूरे देश के लोगों से अनुरोध किया कि वे २२ मार्च को एक निश्चित समय पर १० मिनट के लिए थालियाँ, तालियाँ व घण्टियाँ बजाएँ। इसके दो कारण थे। एक था, स्वास्थ्यकर्मियों को सम्बल प्रदान करना व उनके प्रति कृतज्ञता अभिव्यक्त करना। दूसरा कारण यह था कि लोगों द्वारा उत्पन्न किए गए ध्वनि-स्पन्दन, वातावरण को अवांछित नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त करने में सहायक होंगे।

जब मैंने इसके बारे में सुना, मुझे ध्वनि के विषय में श्रीगुरुमाई द्वारा बताए गए बाबा मुक्तानन्द के ये शब्द याद आ गए। एक बार बाबा जी ने कहा, "आरती के समय. . .डमरू बजाए जाते हैं, नगाड़े बजाए जाते हैं और शंखनाद किया जाता है। इन वाद्यों की ध्वनि मन के सूक्ष्मतम भाग तक पहुँचती

है।" और विशेषकर नगाड़े की ध्वनि के विषय में बाबा जी कहते थे कि यह हृदय की अन्तरतम कोशिकाओं तक पहुँचती है जहाँ कोई भी दवा नहीं पहुँच सकती।

उत्तरी, पश्चिमी और पूर्वी यूरोप की यात्रा करते हुए मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है।

मुझे आशा है कि आप सभी को इस बारे में बहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है कि किस प्रकार सिद्धयोग की साधना करना आपको अपने जीवन के लक्ष्यों को खोजने की दिशा में ले जाता है।

मुझे आशा है कि आप जो हैं, उसके लिए श्रीगुरुमाई के प्रेम और व उनकी सराहना को आपने महसूस किया होगा।

मुझे आशा है कि इस विचलित कर देने वाले, अशान्तिपूर्ण समय में आपने श्रीगुरुमाई के सन्देश, "आत्मा की प्रशान्ति" को अपने सुदृढ़ सहारे के रूप में पाया होगा।

हम 'अर्थ डे' की ५०वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं और साथ ही आपके देशों में श्रीगुरुमाई की महायात्रा की २५वीं वर्षगाँठ, रजत जयन्ती मना रहे हैं। अपनी सिद्धयोग साधना को करते रहने की हमारी गहरी ललक के कारण, गुरुमाई जी ने हमें सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा सिद्धयोग वैश्विक हॉल में 'मन्दिर में रहो' सत्संगों के रूप में आशीर्वाद प्रदान किया है।

शीघ्र ही, हम सिद्धयोग वैश्विक हॉल से विदा लेंगे। तथापि, जाने से पहले, मैं आपको एक बात का स्मरण दिलाना चाहता हूँ—और वह है, 'श्रीगुरुमाई के वर्ष २०२० के सन्देश पर अभ्यास-पुस्तिका' के साथ कार्य करना। नववर्ष-सन्देश पर इस अभ्यास-पुस्तिका में हमें हर सप्ताह, सीधे श्रीगुरुमाई से प्रश्न प्राप्त होते हैं और साथ ही इन प्रश्नों पर चिन्तन-मनन करने व उन पर कार्य करने के लिए, विभिन्न रचनात्मक तरीक़े भी प्राप्त होते हैं—ताकि हम वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश : "आत्मा की प्रशान्ति" के बारे में सीख सकें व इस पर अपनी समझ को विकसित कर सकें।

यह अभ्यास-पुस्तिका इस बात में मेरी सहायता करती है कि मैं श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश को सप्ताह-दर-सप्ताह, पूरे वर्ष अपने मन में अग्रस्थान पर रखूँ। और यह मेरे लिए वह आधारशिला है, वह पारसमणि है—जो मुझे अपनी आत्मा की प्रशान्ति के साथ जोड़ देती है। अपने अध्ययन के दौरान मेरे सामने एक नई अन्तर्दृष्टि उभरकर आती है, उस दौरान एक ऐसा शक्तिपूरित क्षण होता है, जब मैं आत्मा के साथ जुड़ जाता हूँ। तब मैं पाता हूँ कि मेरे मन में जो भी चिन्ताएँ और भ्रान्तियाँ होती हैं, वे मिट जाती हैं और मेरा मन फिर से अपनी आरम्भिक स्थिति में आ जाता है—वह आत्मा के प्रज्ञान के साथ एकलय हो जाता है। यह एक जादुई क्षण होता है, कृपा से पूरित क्षण होता है।

यह हमारा सद्‌भाग्य रहा है कि हम सिद्धयोग वैश्विक हॉल में आयोजित इस सत्संग में उपस्थित हैं। और, यह कितना दिव्य, कितना अनुपम सत्संग रहा है।

‘मन्दिर में रहो’— बड़े बाबा के साथ।

‘मन्दिर में रहो’—गुरुमाई जी के साथ।

गुरुमाई जी, हम कृतज्ञ हैं।
बाबा मुक्तानन्द, हम कृतज्ञ हैं।
बड़े बाबा, हम कृतज्ञ हैं।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।